Part-2 Paper-IV Unit-1

# Intensive Subsistence Farming

Contd:—

S. Mazumdar

गहन निर्वाहक कृषि की विशेषता:— सघन निर्वाहक कृषि की व्यवस्था, पद्धति, वातावरणीय अवस्था और प्रकार का विवेचन करने के बाद निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है

1) खेतों का आकार काफी छोटे होते हैं।

2) मानव श्रमिकों द्वारा साधारण औजारों जैसे फावड़ा, खुरपा, हल का प्रयोग किया जाता है

3) खेतों को जोतने के लिए एवं सिंचाई के लिए प्रायः बैल और भैंस का उपयोग किया जाता है, साथ ही कटी हुई फसलों को तथा अनाज आदि को ढोकर ले जाने के लिए बैलगाड़ियों तथा भैंस बग्घियों का प्रयोग किया जाता है।

4) मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए पशुओं का गोबर, मानव मल को खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। साथ ही कम्पोस्ट तथा हरी खाद और थोड़े उर्वरकों का प्रयोग भी बड़ी सावधानी से किया जा रहा है,

5) फसलों के हेर फेर द्वारा भी मिट्टी का उपजाऊ पन कायम रखा जाता है

6) आवश्यकतानुसार फसलों की (खासकर चावल) सिंचाई की जाती है।

7) द्विफसली विधि (Double Cropping) तथा अन्तर फसली विधि (Inter Culture) द्वारा अर्थात एक ही खेत में एक फसल के बीच-बीच दूसरी फसल बोकर भूमि का वर्षभर पूरा उपयोग किया जाता है, जिससे अधिक उत्पादन होता रहता है

8) खेतों की भूमि को समतल बनाने के लिए उच्च भूमि तथा पहाड़ी ढालों पर सीढ़ीदार खेत बना लिए जाते हैं।

9) सबसे अधिक भूमि पर अनाजों तथा साग-सब्जियों का उत्पादन किया जाता है, जिससे अधिकाधिक जनसंख्या का भरण पोषण हो सके, साथ ही कपास-जूट जैसे कच्चे मालों से आवश्यकता पूर्ति होती है।

10) इस कृषि में प्रयोग के लिए पशुपालन भी किया

जाता है, इन क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक होने के कारण कृषि उत्पादन में अधिकांश भूमि उपयोग होता है और पशुओं के लिए विस्तृत चरागाह खाली नहीं छोड़ी जाती, चीन जैसे देशों में मुर्गी और सुअर पाले जाते हैं, जिसके लिए विस्तृत चरागाह की जरूरत नहीं होती।

II) सघन कृषि से छोटे-छोटे खेतों से भी अधिक उपज प्राप्त की जाती है, मिट्टी का भी अधिकतम उपयोग उत्पादन के लिए किया जाता है, इस प्रक्रिया में मानवीय श्रम का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

I2) मानवीय दृष्टिकोण से ऐसे कृषि प्रदेशों के किसानों का जीवन स्तर काफी निम्न और स्थिति दयनीय होती है। इनके पास पूँजी का अभाव रहता है साथ ही प्राकृतिक आपदाओं यथा बाढ़, सुखाड़ से ये काफी प्रभावित रहते हैं।

वितरण :-

1) भारत :- गहन कृषि कार्य के लिए भारत एक प्रमुख प्रदेश है, जहाँ चावल की खेती खाद्यान्न के रूप में सर्वाधिक होता है, यहाँ बिहार, प. बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, आसाम, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र राज्यों के अधिकांश भागों में चावल की खेती होती है। यहाँ चावल छिटकर, छिड़काव तथा रोपुआ विधि से होता है यहाँ 60% भूमि में शीतकालीन धान जबकि तमिलनाडु, उड़ीसा तथा प. बंगाल में शरद कालीन धान होता है। पंजाब, हरियाणा, उ. प्रदेश तथा मालवा पठार में गेंहू का प्रमुख उत्पादन होता है, गुजरात, महाराष्ट्र में गेंहू के साथ अन्य फसलें भी मिश्रित रूप से उगाई जाती है।

2) चीन :→ यह विश्व का सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है, द. तथा मध्य चीन चावल का प्रमुख उत्पादक प्रदेश है, यांग्त्सीकियांग, सिक्यांग इत्यादि नदी घाटियों तथा डेल्टाओं एवं सहायक नदी

घाटियों में कुल कृषि भूमि के 80-90% भाग पर सिर्फ चावल की खेती होती है। अन्य फसलों में गेहूं यहाँ दूसरी बड़ी उपज है।

3) जापान → जापान में जापानी विधि से चावल की खेती की जाती है। यहाँ द. तथा उ. होकैडो द्वीप से लेकर क्यूशू द्वीप के द. समुद्रतटीय मैदानी भागों में वर्ष में दो धान की फसलें होती है।

4) इन्डोनेशिया → यहाँ जावा में चावल की अति गहन खेती होती है। इसके अलावा सुमात्रा मदुरा, सेलीबीज इत्यादि द्वीपों में चावल को ही प्रमुख फसल के रूप में उगाया जाता है। यहाँ कई जगहों पर सूखी कृषि, कई भागों में लदांग कृषि तथा कई भागों में फसलों का मिश्रित संयोजन पद्धति द्वारा कृषि कार्य किया जाता है।

5) बर्मा → यहाँ के निवासियों के लिए खेती एवं व्यापार में 70% हिस्सा चावल खेती का होता है, उत्पादित कुल चावल का 2/3 हिस्सा निर्यात कर दिया जाता है। अधिकांश चावल इरावदी डेल्टा के दलदली भूमि तथा निचली घाटियों के बाढ़ क्षेत्रों में उत्पन्न किया जाता है।

6) बांग्लादेश → यहाँ पद्मा और ब्रह्मपुत्र डेल्टा प्रदेश में चावल उपजाया जाता है। खुलना, मैमनसिंह, जसोर, ढाका, नारायणगंज, इत्यादि जिलों में वर्ष भर में धान की दो फसलों को प्राप्त किया जाता है। डेल्टाई भागों में धान के साथ जूट की खेती भी कर ली जाती है।

—— X ——